नदियां रहती खुद ही प्यासी-धरती करे पुकार

नदियां रहती खुद ही प्यासी

नदियों ने ओढ़ ली उदासी।
हिरन चाल सी चलने वाली
अब चलती हैं धीमे-धीमे।
निर्भय होकर बढ़ने वाली
कदम बढ़ाती सहमे-सहमे।
प्रतिदिन मीलों चलती थी जो
अब चलती हैं दूर जरा सी।
नदियों .....

स्वच्छ और पावन जल वाली
अब लगती हैं बदली-बदली।
दूषित नालों के कारण ही
नदियां हो गयी गदली-गदली।
इतनी दूषित हुई हैं नदियां
रहती हैं वो खुद ही प्यासी।
नदियों .....

कूड़ा करकट सभी तरह का
इन्हें समर्पित करता मानव।
अपने पापों को धो लेता,
इनको गदला करता मानव।
गदली सी यमुना मथुरा में,
गंगा पहुँच न पाती काशी।
नदियों .....

संगम पर आ दो धाराएं
आपस में मिलती बतियाती।
थकी-थकी सी दिखती दोनों,
अपने आंसू रोक न पाती।
स्वार्थी मानव हमको भूला,
जब से वो बन गया विलासी।
नदियों .....

धरती करे पुकार

तपती धरती कर रही, अब तो यही पुकार।
वृक्ष लगाकर छाँह करो, वृक्ष मेरा श्रृंगार।।
तप्त रवि ने सुखा दिया, धरती का सब नीर।
पड़ी दरारें देह पर, कहती उसकी पीर।।
प्यासी धरती में पड़ी, गहरी-बड़ी दरार।
सूख रहे हैं स्रोत अब, धरती हुई बीमार।।
वृक्षारोपण कर सखे! धरती करे पुकार।
वरना तो हो जाएगा, पर्यावरण बीमार।।
अरे! अचानक ही प्रभु, कर बैठे क्यों क्रोध।
आने वाली आपदा, तनिक हुआ न बोध।।
देव भूमि में कर्म असुर, है मानव की भूल।
इसीलिए प्रकृति कुपित, चुभा रही है शूल।।
दोहन किया प्रकृति का, मानव ने दिन-रात।
इसीलिए दे रही प्रकृति, त्रासदी की सौगात।।
जहां-तहां अब दिख रहे, केवल पत्थर-रेत।
पर्यावरण बिगड़ रहा, यह इसका संकेत।।
प्रकृति बना लेती स्वयं, निज संतुलन श्रीमान।
इसमें न हो असंतुलन, रख लीजै तुम ध्यान।।
वृक्ष रोपकर कीजिए, धरती का श्रृंगार।
पानी वायु शुद्ध मिले, मिले प्रकृति-प्यार।।
प्राकृतिक आपदा कोई, आएगी न पास।
पर्यावरण कर संतुलित, रख इस पर विश्वास।।
पर्यावरण स्वच्छ हो, मिले स्वास्थ्य वरदान।
इसके हित वृक्षारोपण का, रखना प्रियवर
ध्यान।।

संपर्क करें:
डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल'
मं.न. 82, मुहल्ला-गुजरातियान
धामपुर-246761 (बिजनौर) उ.प्र.